Reg. No. V-27452 **ISSN 0974 7222**

PARISHEELAN

International Multidisciplinary Peer Reviewed Quarterly Research Journal

UGC Sr. No.-19365 **Journal No.-40790**

Vol-XVI **No.-3** **July-Sep, 2020**

Part-2

Editor in Chief
Dr. Anjani Kumar Mishra

Editors
Dr. Archna Dubey
Dr. Sanjay Kumar
Dr. Preetesh Acharya

Published by
SURUCHI KALA SAMITI, VARANASI
Approved by U.G.C., New Delhi
Website-www.skspvns.com
Ph.No. 0542-2310854 **Mob.-**9450016201

Patrons
Padamvibhushan Sri Sundar Lal Bahuguna
(Environmentlist)
Prof. S. S. Kushwaha
(Ex. Vice Chancellor M.G. Kashi Vidyapeeth, Varanasi.)

Editorial Board

Dr. Lav Kush Dwivedi *(Lucknow, U. P.)*
Prof. Spyridon Rongos *(Greece)*
Prof. Shyam Nath Mishra *(Khetari, Rajasthan)*
Dr. Amar Nath Sharma *(Indour, M.P.)*
Prof. Lakshmi Kant Panthi *(Nepal)*
Prof. M.S.Mawri *(Uttarakhand)*
Dr. Mamta Singh *(Dehradun)*
Dr. Ramesh Kumar *(Delhi)*
Dr. Aarti Sheokand *(Kurukshetra, Haryana)*

Excutive Editor- Neha Singhaniya

Peer Reviewed Quarterly Research Journal
© SURUCHI KALA SAMITI

Published by
SURUCHI KALA SAMITI
B 23/45, Gha-A-S, Nai Bazar, Khojwan, Varanasi, (U.P.)
Branch Office- E-3259 RajaJi Puram, Lucknow
e-mail : journalwh@gmail.com / suruchikalas@yahoo.in
Ph.No. 0542-2310854 **Mob.** 9450016201

Note : *Scholars will be answerable to the contents of their articles.*

Content

एच0 आई0 वी0 एड्स के समाजशास्त्रीय साहित्यात्मक विश्लेषण **1 - 8**
डॉ0 सूर्यकांत कुमार

आधुनिक शिक्षा और भारतीय राष्ट्रवाद **9-12**
डॉ जय प्रकाश

भाषा, भाषा का प्रयोजन तथा प्रयोजनमूलक भाषा **13-20**
डॉ0 विनोद कुमार'

बिहार में जमींदारी उन्मूलन : एक अध्ययन **21-26**
डॉ0 रजनीश कुमार

वर्त्तमान में नक्सलवाद का स्वरूप **27-32**
मो० इजहारूल हक

एच0 आई0 वी0 एड्स के समाजशास्त्रीय साहित्यात्मक विश्लेषण

डा0 सूर्यकांत कुमार*

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतः द्वितियक श्रोतों पर आधारित हैं जिसमें एड्स से सम्बंधित हुये पूर्व अध्ययनों का समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया हैं कि किस प्रकार एक जानलेवा बीमारी हैं। षोध कार्य को शुरू करने के पूर्व अनेक संबंधित शोंधों का अध्ययन किया गया। लाइब्रेरी तथा "इन्टरनेट" जैसे आधुनिक – सुविधाओं का भी सहारा लिया गया। शोध विषय से मिलते – जुलते विषय पर, जो शोध पूर्व में सम्पन्न हुए हैं, उन्हे भी एकत्रित कर अध्ययन मनन किया गया। इस क्रम में कुछ साहित्यों का विवरण निम्नलिखित है :– यू0एन0 एड्स और स्वास्थ्य संगठन ने 1998 में षोध कराया जिसमें यह बात उभर कर सामने आयी कि एड्स के रोगियों में संक्रमण का मुख्य तरीका स्त्री पुरूष के बीच दैहिक संबंध है(81 फीसदी) उसके बाद रक्त तथा रक्त उत्पाद चढ़ाना (5.5 फीसदी) और सूई तथा मादक औषधियों का सेवन है (5फीसदी)। जे0 जे0 रोड्रिग्स और एस0एम0 महेण्डल2 ने 1995 में महाराष्ट्र में 13 मई 1993 से 15 जुलाई, 1994 के बीच एस0 टी0 डी0 क्लिनिंक में 2800 आनेवाले पीड़ितों पर यह अध्ययन किया 2800 में 655 एच0आई0वी0 से ग्रस्त थे। 560 महिलाओं की पहचान हुई जो पूर्व से इस कार्य में लिप्त थी। इनमें से 153 यानि 45% एच0आई0वी0 से ग्रस्त थी । 222 महिलाएँ जिनका सेक्स कार्य से नाता नहीं था उनमें एच0आई0 वी0 की दर मात्र 14% रही। इस अध्ययन से यह तथ्य उभर कर सामने आया कि सेक्स कार्य में लिप्त महिलाओं में एच0आई0वी0 संक्रमण का दर अधिक है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको3) ने एक अध्ययन कराया। इस अध्ययन से पता चला कि भारत में 57 लाख लोग एच0आई0वी0 से प्रभावित हैं। इसमें 86% सेक्स संबंधों द्वारा एच0आई0वी0 से पीड़ित हुई है। मुम्बई में 54% महिला यौनकर्मी, 18% पुरूष – पुरूष संबंध बनाने वाले और 13% एंटी नेटल क्लिनिक में जानेवाली एच0आई0वी0 से पीड़ित है। तमिलनाडु में शराब पीने वालों में 17% एच0आई0वी0 से पीड़ित है।

***एम0ए0 पीएच0 डी0 समाजशास्त्र पटना विश्वविद्यालय, पटना**

भारत में यौनि संबंध (Vaginal sex) आम बात है । 14% लोग गुदा सेक्स (Anal sex) भी करने की बात स्वीकार करते हैं। भारत में करीब 77% लोग असुरक्षित संबंध बनाते है। एस0 सोलोमन और ए0के0 चक्रवर्ती4 ने वर्ष 2004 में भारत में एच0आई0वी0 के प्रसार की दर का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया। इस अध्ययन से पता चला कि भारत में एक अरब लोंगों की जनसंख्या में करीब 0.7% ही एच0आई0वी0 से प्रभावित हैं, जबकि 45 लाख लोग जो एच0आई0वी0 से प्रभावित है वह कई देशों की जनसंख्या से अधिक हैं। एच0आई0वी0/एड्स की प्रसार भारत में शहरी और ग्रामीण जनसंख्या में फैला हुआ है। अधिकांशतः दक्षिण – पश्चिम के राज्यों में एच0आई0वी0 गम्भीर है। पश्चिम और दक्षिण के राज्यों में एच0आई0वी0 का फैलाव विषमलिंगी – यौंन संबंधों (Heterosexual) द्वारा है जबकि दक्षिण पूर्व के राज्यों जो ड्रग्स के लिए स्वर्ण त्रिभुज (Golden Triangle) से प्रसिद्ध है वहाँ इंजेक्सन से ड्रग्स लेनेवाले में एच0आई0वी0 का फैलाव हो रहा है। अभी पूर्व के राज्य जो घनीभूत जनसंख्या वाले हैं, वे इससे कम प्रभावित हैं। फिर भी वे चिंता के विशय हैं क्योंकि वहाँ अशिक्षा, गरीबी और भुखमरी बहुत ज्यादा है। यदि एक बार हल्का भी एच0आई0वी0 का आक्रमण हुआ तो पुरा का पुरा पूर्वोतर प्रभावित हो जायेगा, तब काबू पाना असंभव होगा।

एच0आई0वी0/एड्स के 96% ही मामले कुल दस राज्यों में है। जबकि एच0आई0वी0/एड्स के कुल प्रभावितों में 85% यौन संबंधों द्वारा, 3% माता से गर्भावस्था के दौरान, 3% सक्रंमित रक्त चढ़ाने से, 2% इंजेक्शन से और 7: अन्य कारणों से प्रभावित होते हैं । वेंकटरामण5 ने 2001 में भारत में एच0आई0वी0 के प्रसार की दर पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया । इस अध्ययन हेतु 1999 को बेस लाईन (Base line) बनाया गया । इस बेस लाईन के आधार पर 1999 में एच0आई0वी0 पीड़ित 24.9 लाख से 2005 में 39.3 लाख हो गया । यह बदतर स्थिति 68.7 लाख तक भी पहुँच सकता था। एच0आई0वी0 के प्रचार की दर कण्डोम के प्रयोग से प्रभावित होती थी। इस अध्ययन का आधार केवल महिला यौनकर्मी की थी। उन्हीं के आधार पर आँकड़ों को प्रक्षेपित किया गया। सत्यमूर्ति एवं सोलोमन6 ने 1996–97 में एड्स और इसका समाज पर प्रभाव विषय पर शोध किया। इस शोध में यह तथ्य सामने आया कि विशेशकर गरीब लोगों पर एड्स बहुत भारी पड़ता है। साथ ही यह युवा वर्ग को बिल्कुल मसल कर रख देता है। एड्स के कारण समाज को भारी वितीय हानि उठानी पड़ती है । जिस परिवार के किसी भी सदस्य को एड्स हो जाता है उसकी औसत आय में 56 – 67% की कमी हो जाती है । यह किसी भी देश

की पूरी अर्थव्यवस्था को चौपट करके रख देता है । इसके कारण विकास के सारे कार्य अवरूद्ध हो जाते हैं ।

येमुल, एस0दास0 और आर0 देशमुख7 ने मध्य मुम्बई में अत्यधिक संभाव्यता वाले 200 लोगों पर अध्ययन किया जिसमे 42% एच0आई0वी0 से संक्रमित पाये गये। इसमें 72% लोगों में हार्पिस सिम्पलैक्स वायरस –2 था। 38: सिफलिस से प्रभावित थे। 28% लोगों को गोनोरिया था हालांकि 26 से 35 आयु वाली महिलाएँ जो अत्यधिक यौन सक्रिय थी उनमें कम से कम वाली में एस0 टी0 डी0 ज्यादा था। डा0 निर्मलामूर्ति और सुश्री अखिला वासन8 फाउन्डेषन फॉर रिसर्च इन हेल्थ– सिस्टम, बंगलोर द्वारा "सेक्स और युवाओं का यौन व्यवहार" पर एक षोध किया गया इस षोध में इनहोने निश्कर्श कि वेष्याओं के पास जाने वाला युवा अत्याधिक जोखिम युक्त यौन व्यवहार करते है। जिससे कि एस0 टी0 डी0 और एच0आई0वी0 /एड्स होने का खतरा दोनो सर्वाधिक होता है।

पी0 जे0 पेल्टो9 ने भी 1999 में उड़िसा में एक षोधकार्य को सम्पन्न किया जिसमें यह निश्कर्श निकल कर सामने आया कि राश्ट्रीय राजमार्गों के आस पास रहने वाले युवा व्यवसायिक यौनकर्मियों के पास ज्यादा जाते है। जबकि सुदूर देहात में रहनेवाले युवा गाँव की कुँवारी कन्याओं से अपनी यौन पिपासा षान्त करते है। सी0 हारकोर्ट और बी0 डोनोवन10 ने 2005 में सेक्स वर्क के ऐसे विभिन्न प्रकारों को सूचीबद्ध करने के लिए एक अध्ययन किया। इन्होने कुल 25 प्रकार के यौनकार्य की पहचान की। यौन कार्य की पहचान के लिए कार्यस्थल, ग्राहकों से सौदा पटाने के प्रकार और यौन व्यवहार आदि के आधार पर इसका वर्गीकरण किया गया। इन 25 प्रकारों को दो समूहों में विभाजित किया गया। एक अप्रत्यक्ष और दूसरा प्रत्यक्ष। वैधानिक और अवैधानिक प्रकार के यौन कार्य भी पहचाने गये। चकला घर और रेड लाईट एरिया यौन कार्य स्थल भी हैं तो पब रेस्तराँ, होटल, ढाबा आदि में मिलने वाला सेक्स भी है। सस्ता सेक्स स्वास्थ्य के दृश्टिकोण से ज्यादा खतरनाक पाया गया है। जबकि महेंगा सेक्स स्वास्थ्य के दृश्टिकोण से ज्यादा बेहतर था। अचानक मिलनेवाला सेक्स भी पहचाना गया। लेकिन सधारणतया इसे सेक्स वर्क के रुप में मान्यता नहीं दी गई। गरीब यौनकर्मी हिंसा के षिकार ज्यादा होते थे। जबकि सम्पन्न यौनकर्मी की स्थिति बेहतर थी इस प्रकार इस अध्यन ने समूचे विष्व में फैले यौन कार्य को सूत्रबद्ध करने का कार्य किया।

एस0 जना0 और ए0 के0 चक्रवर्ती11ने वर्श 1994 में एक अध्ययन कोलकता में किया गया। इस अध्ययन से यह निश्कर्श निकला कि सभी यौनकर्मी,

योनि सेक्स में लिप्त थी 75: मौखिक सेक्स भी करती थी इनमें से 4: गुदा सेक्स भी करती थी। 83: यौनकर्मी यौनकर्म के बाद अपने यौनांग के बाहरी हिस्से को धोती थी। 75: यौनकर्मी एस0 टी0 डी0 के बारे में जानती थी। जबकि 25: यौनकर्मी एच0 आई0 वी0 के बारे में जानती थी। एक तिहाई पिछले एक माह से एस0 टी0 डी0 का इलाज करवाने किसी–ना–किसी निजी या सरकारी अस्पताल में गई थी।

जे0 एफ. ब्लेनचार्ड और ओ0 मील12 ने 2005 में कर्नाटक में यौनकर्मियों पर अध्यन किया। कुल 1588 महिला यौनकर्मी से साक्षात्कार ;प्दजमतअपमूद्ध लिया गया। जिसमें 414 ने यह स्वीकार किया कि वे देवदासी से सेक्स वर्कर्स बनी महिलाएँ अन्य सेक्स वर्कर की अपेक्षा गाँवों में ज्यादा कारोबार करती थी इस प्रकार षिक्षित की अपेक्षा अषिक्षित इस व्यवसाय में क्रमसः 76.9% और 92.8: थी। देवदासी से सेक्स वर्कर बनी महिलाएँ अल्प आयु 15 वर्श से 21 वर्श में प्रवेष कर गयी थी। घर से व्यवसाय चलाने के मामले में भी ये अग्रीणी थी। क्रमषः 68.6% और 14.9% इनके ग्राहक कि संख्या पिछले सप्ताह में 9 से 6 ग्राहक प्रतिदिन था। राज्य के भीतर देषान्तरण के मामले में ये अन्य के अपेक्षा ज्यादा देषान्तरित होती थी। क्रमषः 4.6: और 18.6:। हालांकि राज्य से बाहर देषान्तरण के मामले में ये अन्य की अपेक्षा ज्यादा देषान्तरित होती थी। क्रमषः 19.6: और13.1:। ग्राहको द्वारा हिंसा इन पर अन्य के मामले कम था। क्रमषः 13.3: और 35.8:साथ ही पुलिस भी अन्य के मुकाबले इन्हे कम तंग करती थी। क्रमषः 11.6: और 44.3:। एस0 एम0 महेण्डल और एम0 ई0 षेफर्ड13 ने वर्श 1996 में पुणे के दो एस0 टी0 डी0 क्लिनिक में आनेवाले लोगों का अध्ययन किया। मई 1993 से अक्टुबर 1995 के बीच आनेवाले कुल 5321 लोगों पर अध्ययन किया गया। एच0आई0वी0–1 का दर 21.1: पाया गया। यह दर महिलाओं में अधिक 32.3: जबकि पुरुशों में कम 19.3: था। अधि िक उम्र, यौनकर्म, सेक्सुअल पार्टनर, गुदा सेक्स, षिक्षा की कमी आदि एच0 आई0 वी के प्रसार के मुख्य कारणों में से थे। कण्डोम का प्रयोग से इसकी तीब्रता में कमी पायी गयी। यह जरुरत महसूस की गई कि जबतक एच0आई0वी0 की कोई दवा न बनें तबतक इसके बचाव के लिए जागरुकता बहुत जरुरी है। वी देसाई और जे0के0 कौषाम्बिया 14 ने वर्श 2001 में सूरत के रेड लाईट एरिया में 43.2: महिला यौनकर्मी को पाया। ये महिला यौनकर्मी सूरत के रेडलाईट एरिया कि थी । कण्डोम प्रयोग का दर अधिक था। इसके बावजूद एच0टी0डी0 और एच0आई0वी0 की दर भी उच्च प्रतिषत पर ही था। कुल 118 यौनकर्मी पर यह अध्यन किया गया। औसतन प्रत्येक यौनकर्मी एक दिन में पाँच ग्राहकों के साथ यौन संबंध

बनाती थी। 94.9 प्रतिषत प्रायः कण्डोम का प्रयोग करती थी।

एस रामालिंगम और आर बनर्जी15 ने वर्श 2000 में भारत में एच0आई0वी0 ग्रस्त लोगों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह तथ्य उभर कर सामने आया कि एच0 आई0 वी0 वायरस वैसे 50: व्यक्तियों में प्रवेष किया जो यौनकर्मियों के संसर्ग में दस बार से भी कम रहें थे। यह बात भी सामने आयी कि स्त्री से पुरुश में एच0आई0वी0 वायरस का संक्रमण ज्यादा हुआ है। अनाम16 लोगो द्वारा वर्श 2005 में एक अहमदाबाद में अध्ययन किया गया। यह अध्ययन एक महिला संगठन ज्योति संघ और अहमदाबाद एड्स नियंत्रण संगठन द्वारा किया गया था। 2000 से 2004 के बीच अहमदाबाद के यौनकर्मी के बीच किया गया। यह अध्ययन बताता है कि यौनकर्मियों में कण्डोम प्रयोग करने का चलन 32: से बढकर 79: हो गया। पाँच से अधिक ग्राहाकों के साथ यौन सम्बन्ध बनानेवाली यौनकर्मियों में भी कमी पायी गयी। एच0आई0वी0 का प्रतिषत भी 7.2से4.2: हो गया।

वाई0 एन0 सिंह और ए0एन0 मालवीय11 ने दिल्ली में महिला यौनकर्मीयों पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि एच0आई0वी0 पर जागरुक्ता 5: से बढकर 70:हो गयी है। कण्डोम का प्रयोग 20: से बढकर 50: हो गया है। बेस लाईन ;ठेंम सपदमद्ध सर्वे के पहले केवल एक महिला एच0आई0 वी0 से पीड़ित थी, बाद में भी एक ही मिली हालांकि यह दोनो अलग–अलग थी ए0ए0 दिवाकर और ए0एस0 गोगटे18 ने वर्श 2000 में एक अध्ययन किया और निश्कर्श दिया कि एस0टी0डी0 क्लिनिक में आनेवाली महिलाओं में 58.5: एच0 आई0 वी0 से संक्रमित पायी गयी जिसमें 88.5: महिला यौनकर्मी थी। गोनोरिया और एच0आई0वी0 साथ–साथ 75: महिलाओं में पाया गया। पी0मडी बनन और ए0 हरिनान्डेज ने वर्श 2005 में अल्कोहल का सेवन करनेवाली पर अध्ययन किया। 1741 व्यक्तियों का नमूना लिया गया। इसमें 14: एच0 आई0वी0 था जिसमें 64 एच0आई0वी/एस0टी0डी0 से पीड़ित थी। 92 ने महिला यौनकर्मी के साथ सेक्स सम्बन्ध बनाने की बात स्वीकार किया था। जिसमें 66: ने अल्कोहल के नषे में सेक्स किया था। इस अध्ययन का निश्कर्श था कि नषे में महिला यौनकर्मी के साथ सेक्स करने वाला एच0आई0वी/एस0टी0डी0 से ज्यादा पीड़ित हो रहे थे।

डा0 आर0 जय श्री और डा0 के0 पार्वती डिपार्टमेन्ट ऑफ वीमेन्स स्टडीज आंध्रप्रदेष ने भी षोधपत्र प्रस्तुत किया। इस सोध में यौन व्यापार के धंधे में आने के लिए मुख्य रुप से गरीबी को जिम्मेवार ठहराया गया। इन्होने बताया कि करीब 77: यौनकर्मी दलालों के द्वारा देह का धंधा करती है। और अपनी कमाई की आध ी से अधिक राषि दलालों को दे देती है। बदले में इन्हे आवास और सुरक्षा उपलब्ध ा कराते है तथा ग्राहक खोजकर लाते है। नाको21;छंजपवदंस ।प्वै ब्वदजतवस व्तहंदपेंजपवदद्ध ने समस्त भारत में चलने वाले वी0सी0टी0सी0 ;टवसनदजंतल ब्वनदेमससपदह – जमेजपदह ब्मदजतमद्ध में स्वेच्छा से आनेवाले ग्राहकों में से एच0आई0वी0 पॉजीटिव का परामर्ष के दौरान अध्ययन किया। इस अध्ययन से पता चला कि एड्स के रोगीयों में संक्रमण के संचरण का सबसे प्रमुख तरीका स्त्री/पुरुश के बीच दैहिक संबंध है। यह 81: के आकड़े तक पहुँच जाता है। जबकि रक्त तथा रक्त उत्पाद से 5.5: और इंजेक्षन से 5 फीसदी लोग एड्स के षिकार होते है।

बिसैक्स22 (Bihar State Aids Control Society) ने मुजफरपुर के चतुर्भुज स्थान में स्थानीय एन0जी0ओ0 ;छळव्द्ध सेवा संकल्प से एक बेस लाईन सर्वे कराया। बेस लाईन सर्वे में यह स्पश्ट रुप से रेखांकित की गयी कि तकरीबन 85: यौनकर्मी की बीमारी से पीड़ीत है। इन्हें एस0 टी0डी0 है। परन्तु एम0बी0बी0एस0 डाक्टर के पास आने के बजाय ये नीम हकिम या झोला–छाप चिकित्सक के पास जाती है, जो कि उनके मर्ज को हटाने की बजाये और बढा देता है। भारत सरकार23 ने भी एक व्यापक सर्वेक्षण कराया था इस सर्वेक्षण से पता चला कि केवल छः मुख्य नगरों (दिल्ली, कोलकता, चेन्नई, बंगलुर, और हैदराबाद) में कम से कम 25 हजार बच्चें वेष्यावृति में लगे हुए है और इस अल्प व्यस्कों को एस0टी0डी0 और एच0आई0वी0/एड्स का खतरा और भी अधिक होता है। 1990 में इंडिया टुडे ने 5 लाख अल्प व्यवस्कों को वेष्यावृति में लिप्त बताया था। यह तथ्य इस बात का स्पश्ट संकेत है, कि संभोग द्वारा एच0आई0वी0 के ैफैलने की संभावना कम होने के बावजूद आवृति अधिक होने के कारण संभोग सं एच0आई0वी/एड्स का प्रसार सर्वाधिक होता है।

जना, समरजीत, नंदनी, साधना25 ने 1998 में कोलकता के सोनागाछी में एक षोध किया जिसमे यह बात उभरकर सामने आयी कि यदि सेक्स वर्कर के बीच एस0टी0डी0/एच0आई0वी0 के प्रसार को रोकना है, तो उन्हे खुद अपना नेतृत्व करने देना चाहिए। ताकि वे स्वयं अपने आप को मौत के मुह में जाने से बचा सकें। डा0 सुधिर कुमार26, ए0एन0सिन्हा इंस्टीट्यूट ऑफ सोषल स्टडीज ने वर्श 2005 मे बिहार में व्यवसायिक यौनकर्मी ट्रक चालक और प्रवासी मजदूर पर षोध ा किया। इस सोध के द्वारा उन्होने बिहार में कुल 31845 महिला यौनकर्मी होने की स्वीकारोक्ति की है जिसमें 57.50 फीसदी चलंत ;डवइपसमद्ध महिला यौनकर्मी है। वही वेष्यालय में रहनेवाली की संख्या 5350 है, जो कुल संख्या का मात्र 16. 80 फीसदी है।

पी0 कृश्णामूर्ति और अन्य27 ने 1998 में एच0आई0वी0 / एड्स और यौनकर्मियों को सुरक्षित यौन व्यवहार विशय पर षोध किया जिसमे यह तथ्य उभर कर सामने आया कि एन0जी0ओ0 ;छळव्द्ध के लक्षित हस्तक्षेप कर्मियों की वजह से 95ः महिला यौनकर्मी ग्राहकों से कण्डोम के साथ सेक्स करने की बात कहती है। लेकिन ग्राहक छुट ना जाये इस डर से प्रतिरोध करने पर बिना कण्डोम के भी सेक्स करवा लेती है। संश्री ष्वेता ;ज्ंजं प्देजपजनजम व‍िवबपंस ैबपमदबमेद्ध28 ने षोध किया और यह निश्कर्श दिया कि एच0आई0

वी0 / एड्स यौनकर्मियों के बीच कहर बनकर टुट रहा है। मुम्बई में वेष्यालय की तकरीबन 88ः यौन कर्मी एस0टी0डी0 रोग से पीड़ित है। एस0टी0डी0 रोग के कारण एच0आई0वी0 / एड्स का खतरा बढ जाता है। क्योकि एच0आई0वी0 / एड्स से प्रभावित 82ः यौनकर्मी / एच0टी0डी0 रोग से ग्रस्त थी।

संदर्भ

1. यू0एन0एड्स गाईड टू नेषनल स्ट्रेटेजिक प्लानिंग एण्ड सिचुएषन एनालिसिस, मॉड्यूल–4 यू0एन0एड्स जिनेवा, 1998
2. रोड्रिग्स, जे0 जे0 एण्ड एस0 एम0 महेण्डल : रिस्क फैक्टर फॉर एच0आईवी0 इंफेक्षन इन प्यूपिल स्टैन्डिंग क्लिनिक फॉर सेक्सुअल ट्रांसमिटेड डिजिज इन इण्डिया, बी0एम0जी0 31170000, 1995
3. डब्लू0डब्लू0डब्लू0नाकोऑनलाइन.ओआरजी
4. सोलोमन एस एण्ड चक्रवर्ती ए0के0– ए रिव्यू ऑफ दि एच0आई0वी0 एपेडेमिक इन इण्डिया, एड्स एजुकेषन एण्ड बिहेवियर, 2004
5. बेंकटरामण– एक्सटेंट एण्ड स्पीड ऑफ स्प्रेड ऑफ एच0आई0वी0 इंफेक्षन इन इण्डिया थ्रू दि कॉमकर्षियल सेक्स वर्कर्स ए पर्सपेक्टिव ट्रॉपिकल मेडिसिन एण्ड इंटरनेषनल हेल्थ पू0 1040–61, 2001
6. सत्यमूर्ति एवं सोलोमन– ए स्टडी ऑन एच0आई0वी0 / एड्स एण्ड इट्स इम्पैक्ट्स ऑन सेसाइटी, एड्स एण्ड वर्ल्ड, पृ0 156–86, 1996–97
7. येमुल, एस0 दास एवं देषमुख, आर0 – ए स्टडी ऑन एच0आई0वी0 / एड्स सेक्स वर्कर्स इन सेन्ट्रल मुम्बई, पृ0 184–91, 2003
8. निर्मला मूर्ति एवं वासन, अखिला ए0 स्टडी ऑन सेक्स एण्ड विहेवियर ऑफ यंग इन इण्डिया, पृ0 212–225–2001

9. पेल्टो, पी0 जे0– ए कम्बाईन स्टडी ऑन सेक्स एण्ड वर्कर्स इन राज्यस्थान, पृ0 117–32, 1999
10. हारकोर्ट, सी0 एवंम् डोनोवन, बी–दि मेनी फेसेज ऑफ सेक्स वर्क, सेक्सुअल ट्रांसमिटेड, पृ0 201–206, 2005
11. जना0 एस0 एवं चक्रवर्ती, ए0 के0– कॉम्युनिटि बेस्ट सर्वे ऑफ एस0टी0डी0 / एच0आई0वी0 इंफेक्षन एण्ड सी0डी0डब्लू

******